षष्ठ अध्याय

उपसंहार

षष्ठ अध्याय

उपसंहार

नीरज जी के काव्यसंकलनों के अध्ययन के बाद उनके संबंध में महत्त्वपूर्ण निष्कर्षों का सहज आकलन किया जा सकता है।

आधुनिक युगीन कवियों में, बीसवीं सदी के कवियों में नीरज सब से अलग दिखाई देते हैं। नीरज उन प्रगतिशील और विकासशील कवियों में है जिन्होंने किसी वाद विशेष की परिधि में सीमित होकर काव्यसृजन नहीं किया। अपितु आधुनिक हिंदी कविता की विभिन्न धाराओं के बीच परस्पर संबंध स्थापित किया है। नीरज की कविता व्यष्टि और समष्टि दोनों को समान स्थान देती है। इसी कारण नीरज की कविता में मानवतावादी दृष्टि जहाँ-तहाँ छाई है।

नीरज की कविता प्रेम, शक्ति तथा समष्टिचेतना इन तीन काव्यधाराओं का पवित्र त्रिवेणी संगम हो है। वह निरंतर गतिशील रहकर प्रगति के मार्ग पर बरकरार है। इसलिए नीरज की कविता में एक ओर जहाँ प्रेम और शृंगार की छाया है तो दूसरी ओर समाज के शोषित, पीड़ित दलित लोगों के आक्रोश के स्तर विद्यमान हैं।

'प्राण-गीत' की भूमिका में कवि ने सर्वप्रथम चार सत्यों का अद्घाटन किया है जिन्होंने इस जीवन को व्याप्त किया है। कवि के अनुसार यह चार सत्य हैं - [1]

1. सौंदर्य चिति
2. प्रेम गति
3. मृत्यु यति
4. रोटी

इन चार सत्यों का मूल्यांकन करना ही प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का उद्देश्य है।

नीरज की कविता में सौंदर्याभिव्यक्ति अलग ढंग से हुई है। कवि की सौंदर्यनुभूति का नजरिया अलग है। नारी सौंदर्य चित्रण में कवि ने सफलता प्राप्त की है। कई चित्र तो इतने माँसल एवं मादक खींचे गए हैं कि वे बरबस रीतिकालीन कविता की, घोर शृंगारी कविता की यादें जीवित करते हैं।

कवि ने पुरुष के सौंदर्य का भी चित्रण किया है। लेकिन कवि पुरुष के सौंदर्य की अपेक्षा उसके साहस, हिम्मत और दिलेरी पर अधिक जोर देता है। कवि की नायिकाएँ रति और उर्वशी की स्मृतियों को उजागर करती हैं किंतु कवि के नायक कामदेव को नहीं अपितु किसी अपराजित और साहसी योद्धा की याद दिलाते हैं जो 'न दैन्यम् न पलायनम्' इस मनोभूमिका को अभिव्यक्त करते हैं।

कवि ने प्रकृति सौंदर्य चित्रण करते हुए प्रकृति के कोमल एवं उग्र दोनों रूपों का चित्रण किया है। किंतु प्रकृति नीरज की कविता में उद्दीपन के रूप में ही अधिकांश आती है और आलंबन के रूप में प्रकृति का चित्रण कम हुआ है।

नीरज की कविता में प्रकृति पृष्ठभूमि के रूप में आती है और कविता में संयोग अथवा वियोग भावना के अनुसार प्रकृति का प्रयोग किया जाता है।

नीरज की कविता युद्धविरोधी स्वरों का उद्घोष करती है। उसके माध्यम से कवि विश्वशांति की कामना भी करता है।

नीरज के सौंदर्य विषयक काव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं - उसकी प्रतीकात्मकता, विचारात्मकता और रहस्यात्मकता इन तीनों का सूत्रपात नीरज की कविता में मिलता है।

नीरज के अनुसार सौंदर्य के कारण प्रेम का निर्माण होता है। आकर्षण से प्रेम की निर्मिति होती है। इसलिए सौंदर्य की प्रेरणा प्रेम को बढ़ावा देती है।

नीरज की कविता में प्रणयानुभूति मिलती है। प्रेम जो इस सृष्टि का मूलतत्व है, साररूप है जिसे स्वयं नीरज भी मानते हैं।

एक ओर जहाँ कवि का वैयक्तिक प्रेम अपनी पीड़ा लेकर पाठकों के सामने आता है, वही वैयक्तिक प्रेम वैश्विकता के विराट धरातल पर जाकर खडा होता है यह नीरज के प्रेम विषयक कविता की विशेषता है। इसके अंतर्गत वैयक्तिकता से प्रेम ऊपर उठकर क्रमशः मानवतावादी और अंत में ईश्वरीय प्रेम में उसकी परिणति हो जाती है।

नीरज की कविता में राष्ट्रीय चेतना के स्वर भी विद्यमान हैं। अंत में कवि मातृभूमि की सीमा को लाँघकर वैश्विकता की ओर बढ़ जाता है। नीरज का मानवतावादी स्वर उनके संपूर्ण काव्य को समेटकर रहा है।

मृत्युबोध आधुनिक कविता की एक प्रमुख प्रवृत्ति है। मृत्यु यह जीवन का अटल एवं परम सत्य होने के कारण काव्य का विषय हो सकता है। 'दो गीत' के मृत्यु-गीत के आधार पर नीरज पर यह इल्जाम लगाया गया कि नीरज मृत्युवादी कवि हैं किंतु नीरज की कविता को पढ़ने के बाद यही तथ्य सामने आता है कि नीरज ने जीवन के प्रति कभी भी अनास्था का प्रदर्शन नहीं किया। मृत्यु तो केवल एक बहाना ही है जिसके माध्यम से कवि ने जिंदगी की दास्तान को मुखर किया है।[2]

नीरज ने वर्तमान समाज की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक विषमताओं और असंगतियों का यथार्थ चित्रण रोटी के परिप्रेक्ष्य में किया है। कवि किसान, मजदूर, श्रमिक और बेरोजगार लोगों की जिंदगी में झाँककर उनकी असफलताओं की तलाश करता है। और उन लोगों को संघर्ष की प्रेरणा देता है जो आज रोटी के कारण लाचार और बेबस बन चुके हैं।

'प्राण-गीत' की भूमिका में नीरज कहते हैं "रोटी की भूख भी प्रेम के अंतर्गत ही आती है"। [3] संसार में आज मजहब के नाम पर झगडे होते रहते हैं लेकिन नीरज ने पचास साल पहले ही दुनिया के सबसे बडे मजहब के रूप में भूख को घोषित किया है।

रोटी से संदर्भ रखनेवाली नीरज की कविताओं का जब हम परिशीलन करते हैं तो कुछ बातें नए स्रिरे से हमारे सामने आती हैं, जैसे - नीरज 'साम्यवादी' नजर से रोटी को देखते हैं लेकिन उन्होंने अपने हाथों से 'आदर्शवाद' का आँचल नहीं छोड़ा है। आदर्शवाद का दूसरा नाम है 'आध्यात्मिक मानववाद' जो बीसवीं सदी में 'आधुनिक गांधीवाद' के नाम से पहचाना जाता है। नीरज के काव्य का 'मानवतावाद' यह सबसे महत्त्वपूर्ग पहलू है। कुल मिलाकर हम इस नतीजे पर आकर पहुँचते हैं कि नीरज की रोटी विषयकर कविता में गांधीवाद एवं साम्यवाद का महासमन्वय हुआ है। यह महासमन्वय जहाँ एक ओर पश्चिमी विचार धारा का प्रवर्तन करता है किंतु उसके दोनों किनारे शुद्ध हिंदुस्तानी अर्थात गांधीवादी किनारे ही है।

कुल मिलाकर नीरज ने यहाँ जो चार सत्य प्राप्त किए हैं उनका हमने जायजा लिया है। अब सवाल है इनके मूल्यांकन का, जो आवश्यक है!

सौंदर्य, प्रेम, मृत्यु और रोटी ये जीवन के चार परमसत्य हैं जिसे नीरज ने अपनी गहन मनोधारणा से प्राप्त किया है।

लगभग ढाई हजार साल पहले एक राजकुमार, सिद्धार्थ ने चार आर्यसत्य प्राप्त किए थे जिनसे वे बुद्ध कहलाने लगे! उनका सबसे पहला सत्य था जगत् तृष्णा से व्याप्त है अर्थात तृष्णा ही इस जगत के दुख का मूल कारण है।

नीरज के द्वारा खोजे गए चार परमसत्य इस परिप्रेक्ष्य में कहाँ तक तर्कसंगत हैं यह देखना निश्चित ही मनोरंजक होगा!

आदमी की तृष्णा अर्थात भूख तथा प्यास कभी खत्म नहीं होती है। नीरज इसके परिप्रेक्ष्य में अपनी बात दोहराना चाहते हैं। आदमी प्रेम का भूखा होता है! आदमी को सौंदर्य की भूख होती है। जीवन में कई बार ऐसा होता है कि आदमी मरण का वरण करना चाहता है किंतु उसे मौत नहीं आती! इसके विपरीत आदमी आजीवन मौत के साए से दूर भागना चाहता है किंतु मरण के पाश उसे जकड़कर ही रहते हैं। इसलिए जीवन की तृष्णा अथवा मृत्यु की तृष्णा इनका भी आदमी सामना करता है। रोटी का दूसरा नाम भूख ही है, जिसे इस लघुशोध प्रबंध में दिखाया है।

भारतीय संस्कृति ने चार पुरुषार्थों का प्राचीन काल से ही घोष किया है जो क्रमशः -

1. धर्म
2. अर्थ
3. काम
4. मोक्ष

आदि हैं। जो अपना रूप बदलकर इन चार परम सत्य में लीन हो जाते हैं। इन चार पुरुषार्थो से हो नीरज की कविता एक बार अंदाज से हमारे सामने आती है जैसे -

नीरज प्रेम के 'धर्म' को मानते हैं। उनकी कविता में अवतरित रोटी यह 'अर्थ' का दूसरा रूप है। सौंदर्य से वासना की अर्थात् 'काम' की उत्पत्ति होती है। और अंत में 'मोक्ष' जो नीरज की कविता में 'मृत्यु' के रूप में आता है।

अतः यह निष्कर्ष निकालना उचित ही है कि इन चार सत्यों के माध्यम से नीरज ने चार पुरुषार्थों की ही सृष्टि की है।

कुल मिलाकर यह चार सत्य जो नीरज ने प्राप्त किए हैं उनका मूल्यांकन करना इस लघुशोध प्रबंध का उद्देश्य है। नीरज के चार परम सत्य अंत में 'भूख' में विलीन हो जाते हैं, क्योंकि कवि नीरज ने ही पचास साल पहले यह घोषणा की थी -

"भूख है मजहब इस दुनिया का

और हकीकत कोई नहीं है!" [4]

नीरज की कविता सौंदर्य से प्रेम का सूत्रपात करती हुई रोटी का साथ लेकर मृत्युदिशा की ओर चली जाती है और अपनी मंजिल तक पहुँचती है।

कवि के अनुसार इन्हीं चार परम सत्यों से हर आदमी का जीवन प्रभावित होता है। यह परम सार्वकालिक सत्य है, कवि नीरज ने जो सत्य प्राप्त किए हैं उनमें से लगभग हर एक सत्य की आपूर्ति मानव चाहता है और उन्हें प्राप्त करने में ही अपनी सारी जिंदगी वह बीता देता है!

0-0-0-0-0

संदर्भ संकेत

1. 'प्राणगीत' भूमिका पृ. 1-2
2. नीरज रचनावली 'दो गीत' खंड 2 पृ. 206
3. 'प्राणगीत' भूमिका पृ. 2
4. **नीरज के लोकप्रिय गीत** पृ. 72

0-0-0-0-0